अक्टूबर 2023

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

समाजवादी हैं तैयार

सभी बाधाएं करेंगे पार

R.N.I. No. 68832/97

नेताजी अमर रहें

22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 2022

प्रथम पुण्यतिथि पर

श्रद्धांजलि

समाजवादी बुलेटिन

अक्तूबर 2023

वर्ष 24 | संख्या 12

अंदर

देवरिया कांड: अखिलेश ने श्रद्धांजलि दी, सरकार पर बरसे 28

06 कवर स्टोरी

समाजवादी हैं तैयार
सभी बाधाएं करेंगे पार

यादों में नेताजी

14

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी-श्री मुलायम सिंह यादव की पहली पुण्यतिथि पर 10 अक्तूबर को सपा ने शिद्दत से उन्हें याद किया, उन्हें श्रद्धांजलि दी और संकल्प लिया कि नेताजी के बताए रास्तों, आदर्शों, संघर्ष को अपनाकर सामाजिक न्याय की लड़ाई को उसकी मंजिल तक पहुंचाएंगे।

गांधी के विचार अब और प्रासंगिक 04

जातीय जनगणना से ही सामाजिक न्याय संभव 36

प्रिय पाठकों

आप सभी के प्यार, उत्साहवर्धन एवं मार्गदर्शन से आपकी प्रिय पत्रिका समाजवादी बुलेटिन, बदली हुई साज-सज्जा के साथ अपने तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। हम आपके आभारी हैं कि अभी तक के सफर में हम आपकी कसौटी पर खरे उतर सके हैं। हम भरोसा दिलाते हैं कि भविष्य में भी आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। कृपया अपना प्यार यूं ही बनाए रखें।

धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक

प्रोफेसर रामगोपाल यादव

☎ 0522 - 2235454

samajwadibulletin19@gmail.com

bulletinsamajwadi@gmail.com

Mob:- 9598909095

/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए

19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित

अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

गांधी के विचार अब और प्रासंगिक

उदय प्रताप सिंह

गांधी जी की सोच हर क्षेत्र में दुनिया से बिल्कुल अलग थी खासतौर पर धर्मनिरपेक्षता के बारे में। गांधी जी ने अपने अखबार हरिजन में लिखा था कि मैं यह नहीं चाहता कि सरकार धर्मविरोधी हो,सरकार को सब धर्म की अच्छाइयों से बहुत कुछ सीखना चाहिए और तभी वह अच्छा शासन दे सकती है।

कोई भी सरकार किसी एक धर्म को विशेष सुविधा न दे बल्कि सभी धर्म का बराबर आदर करे। धर्मनिरपेक्षता उनके लिए आत्ममंथन का विषय था। वे मानते थे कि बिना धर्म के एक सार्थक, सफल, स्वच्छ जीवन की कामना संभव नहीं है। वह अपना रोज का कार्य प्रार्थना से शुरू करते थे, 'ईश्वर अल्लाह तेरो नाम सबको सन्मति दे भगवान।'

गांधी जी ने फरवरी 1947 में हरिजन में लिखा था की सरकार किसी एक धर्म की शिक्षा पर जोर न दे उनका अभिप्राय था हर धर्म की अच्छी बातें बच्चों को शिक्षा के रूप में पढ़ाई जाएं, बताई जाएं।

गांधी जी धार्मिक होते हुए भी यह नहीं मानते थे कि सब कुछ भगवान करता है। वह कहते हैं काम तो मनुष्य को ही करना है भगवान को तो याद इसलिए करना है कि उस काम में सकारात्मकता, भलाई, मानव कल्याण, भाईचारा , सत्य और अहिंसा प्रेम की बहुलता बनी रहे। 1925 में बौद्धों की एक सभा में उन्होंने बड़े प्रफुल्लित अंदाज से कहा था कि जैन मुझे जैन मानते हैं, बौद्ध मुझे अहिंसा के समर्थन के कारण बौद्ध मानते हैं, हिंदू मुझे हिंदू मानते हैं, मेरे बहुत से ऐसे दोस्त हैं जो मुसलमान दोस्त कहते हैं।

धर्म इंसानियत सिखाती है इंसानियत से दूर नहीं ले जाती। गांधी जी साफ कहते थे कि दूसरे धर्म का आदर करने से आप बड़े हिंदू बनेंगे अच्छे हिंदू बनेंगे। अगर कोई मुसलमान दूसरे धर्म का सम्मान करता है तो वह एक अच्छा मुस्लिम कहलाएगा। यह बात हर धर्म पर लागू होती है। गांधी जी का मानना था कि धर्म एक व्यक्तिगत वस्तु है और एक ही धर्म के लोगों में विभिन्न मान्यताएं हो सकती हैं।

हिंदू धर्म में ही कोई शिव को मानता है, कोई विष्णु को मानता है, कोई शक्ति की पूजा करता है ,इससे वह एक दूसरे के शत्रु नहीं हो

फोटो स्रोत : गूगल

जाते। यही बात बड़े पैमाने पर अन्य धर्मों के बारे में भी कहीं जा सकती है। यही गांधी जी का अटूट विश्वास था। गांधी जी ने कई बार सहनशील विश्व धर्म की वकालत में मजबूती से अपने विचार रखे। वह मानते थे कि धर्म का यदि सदुपयोग किया जाए तो धर्म हमको दुनिया से, बाहरी संसार से और बाहरी देशों से जोड़ता है, तोड़ता नहीं है।

गांधी जी रामचरितमानस और तुलसीदास का सम्मान करते थे पर नारी और शूद्र विरोधी चौपाइयों का उन्होंने खुलकर विरोध भी किया और अपनी असहमति जाहिर की। इसी तरह से इस्लाम के किसी मौलवी द्वारा अहमदियों को पत्थर से मारने का धार्मिक फरमान होने का विरोध किया। गांधी जी धर्महीन राजनीति के पक्षधर बिल्कुल नहीं थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि सत्य,अहिंसा के प्रति मेरी आस्था ने ही मुझे राजनीति में लाकर आज़ादी की लड़ाई लड़ने का हौसला दिया है।

कुछ लोग खासतौर से अंबेडकरवादी गांधी जी को जाति प्रथा का समर्थक मानते हैं और गांधी जी थे भी। वह मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते थे इसलिये एक जगह उन्होंने कहा था के सारे दलितों को एकत्रित होकर छुआछूत के विरुद्ध सनातन धर्म का खुलकर विरोध करना चाहिए। मैं इसका समर्थक हूं। उन्होंने किसी भावुक क्षणों में उत्तेजित होकर यहां तक कह दिया था कि अछूतों को समाज से दूर रखने वाले सनातन धर्म का किला अगर मुझे मिल जाए तो मैं उसे भी बारूद से उड़ाने में परहेज़ नहीं करूंगा। संक्षेप में गांधी जी मनुष्य और मनुष्य के बीच में किसी भी भेदभाव के पक्षधर नहीं थे वह मानवतावादी थे, वे धार्मिक संत थे लेकिन राजनीतिक योद्धा भी थे लेकिन युद्ध में उनके हथियार केवल सत्य और अहिंसा ही रहते थे। प्रेम और भाईचारा ही उनके तरकश के रामबाण थे।

आज जब वर्तमान सरकार समाजवाद और सेकुलरिज्म के ख़िलाफ खुलकर सामने आई है तब गांधी दर्शन, खासतौर से समाजवाद और सेकुलरिज्म पर गांधी के विचार पहले से अधिक प्रासंगिक होते जा रहे हैं।

फोटो : बबलू शर्मा

समाजवादी हैं तैयार

सभी बाधाएं करेंगे पार

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी की बढ़ती लोकप्रियता, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के प्रति लोगों के बढ़ते विश्वास और अपनी हार से डरी भाजपा अब हताश हो गई है। हताशा में ही भाजपा सरकार अब महापुरुषों को श्रद्धांजलि देने में भी अड़ंगा लगाने में जुट गई है।

हताश-निराश भाजपा ने अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए संपूर्णक्रांति के नायक जयप्रकाश नारायण की जयंती 11 अक्टूबर को उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करने से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव को रोका तो वे सच्चे समाजवादी की तरह झुके नहीं और जयप्रकाश नारायण की राह पर चलते हुए सरकार की बाधा को पार कर लिया।

श्री अखिलेश यादव ने लखनऊ के जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल सेंटर (जेपीएनआईसी) के गेट पर भाजपा सरकार द्वारा ताला लगाकर उन्हें परिसर में स्थित जयप्रकाश जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से रोकने की कोशिश का जोरदार जवाब दिया। सपा प्रमुख गेट फांदकर महापुरुष जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर यह संदेश भी दे दिया कि समाजवादी पूरी तरह तैयार हैं और वह भाजपा सरकार की कोई भी बाधा पार करने में हिचकेंगे नहीं।

भाजपा सरकार इस बार फिर समाजवादियों के मजबूत इरादों के सामने टिक नहीं पाई। भाजपा सरकार को लगा था कि वह सेंटर पर ताला लगा देगी तो लोकनायक को माल्यार्पण नहीं हो पाएगा। पर, वह चूक गई। उसे मालूम नहीं था कि समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एक दिन पहले ही मजबूत इरादों वाले नेताजी-श्री मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि पर उनके बताए संघर्ष के रास्ते पर चलने का संकल्प लेकर आए हैं। लोकनायक या किसी भी महापुरुष का अपमान समाजवादी बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं।

बात लोकनायक को श्रद्धासुमन अर्पित किए जाने से रोकने की थी इसलिए आमजन भी समर्थन में जेपीएनआईसी पहुंच गए। वहां वहां गेट पर प्रशासन द्वारा ताला लगाकर रोके जाने पर प्रदर्शन शुरू हो गया। मौके पर मौजूद समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं का तर्क था कि जेपी की प्रतिमा पर माल्यार्पण का कार्यक्रम अचानक नहीं बना था।

सबकुछ पहले से तय था और प्रशासन को इसका इल्म भी था। सपा की ओर से संबंधित विभाग को लिखित जानकारी दी गई थी। अनुमति भी थी जिसे अचानक रद्द किया गया। जाहिर है, कुछ तो पर्देदारी थी जिसे प्रशासन छुपाना चाहता था।

तय कार्यक्रम के तहत ही श्री अखिलेश यादव 11 अक्तूबर को जब लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती पर गोमतीनगर, लखनऊ स्थित जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल सेंटर (जेपीएनआईसी) पहुंचे मगर प्रशासन ने सेंटर पर ताला लगा होने का हवाला देकर लोकनायक की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने की अनुमति देने से मना कर दिया।

जबकि यह कार्यक्रम हर साल होता रहा है।

जनता की ताकत के आगे नहीं टिकेगी सरकारी शक्ति

भाजपा सरकार की बाधा को पार कर लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी सरकार में नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव द्वारा जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल केन्द्र का उद्घाटन किया गया था। समाजवादी लोग सम्पूर्ण क्रांति के नायक श्री जयप्रकाश नारायण जी की जयंती मनाते हैं। पहले की तरह इस बार भी हम लोग आये थे, लेकिन पता नहीं क्यों सरकार ने टीन शेड के साथ ताला लगाकर गेट बंद कर दिया।

उन्होंने कहा कि समाजवादी लोग चाहते हैं कि देश जयप्रकाश जी के संघर्ष को जाने। लोकनायक जयप्रकाश जी संदेश था कि संपूर्णक्रांति के बगैर कुछ नहीं हो सकता है। भाजपा के लोग ऐसे महान स्वतंत्रता सेनानी को भी याद करने देने में रोड़ा बने हुए हैं। श्री यादव ने कहा कि आज शुरू हुई यह लड़ाई अब लंबी चलेगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश में परिवर्तन की जरूरत है। जनता को भाजपा सरकार के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना होगा। जनता की ताकत से ही लोकतंत्र, समाजवाद और संविधान बचेगा। भाजपा बाबा साहब के संविधान को बदलना चाहती है। लोगों की आवाज दबाकर आजादी छीन रही है।

जयप्रकाश नारायण जी ने सम्पूर्ण क्रांति का नारा दिया था। जब उस समय देश में चरम सीमा पर महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी थी। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर जनता एकजुट हो गई। आपात काल लगा। उनके साथ बहुत बड़ी संख्या में नेता और जनता जेल गए। कई लोग कई वर्षों जेल में रहे।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ने करोड़ों रुपयों से बना विश्वस्तरीय स्मारक बर्बाद कर दिया। करोड़ों की मशीनें खराब हो रही हैं। सरकार टीन लगाकर क्या छिपाना चाहती है?

उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में जनता की शक्ति सबसे बड़ी है। जनता की ताकत के आगे सरकार की शक्ति नहीं बचेगी। इस बात का दुःख है कि सरकार ने पुलिस लगाकर लोकतंत्र के महानायक की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने से रोका। भाजपा सरकार संविधान और लोकतंत्र को खत्म कर रही है। इस म्यूजियम में जयप्रकाश नारायण के जीवन, संघर्ष की गाथा है। लोग उनके जीवन से प्रेरणा लेंगे। जेपीएनआईसी में हुए नुकसान की जिम्मेदार सरकार है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि अधिकारी जेपीएनआईसी में हुए नुकसान और बर्बादी को छिपाना चाहते हैं। हमने अंदर जाकर देखा तो पाया कि करोड़ों रुपए का सामान बर्बाद हो गया है।

हजारों कार्यकर्ता सेंटर के बाहर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का इंतजार कर रहे थे। श्री अखिलेश यादव समाजवादी लोक जागरण अभियान रथ से जेपीएनआईसी गेट पहुंचे। श्री अखिलेश यादव के पहुंचते ही जोश से लबरेज सपाई नारेबाजी करने लगे। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव भी रथ से उतरकर गेट पर पहुंचे। वहां भारी पुलिस बल तैनात था।

भाजपा सरकार की इस तानाशाही के खिलाफ श्री अखिलेश यादव डटकर खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि वह महापुरुष लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण किए बगैर नहीं जाएंगे। कार्यकर्ता भी समर्थन में नारेबाजी करने लगे। तब, श्री यादव ने जेपीएनआईसी का गेट लांघकर सेंटर परिसर में प्रवेश किया और सम्पूर्णक्रांति के नायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किया।

श्री यादव यह देखकर हैरान रह गए कि लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा को काले कपड़े से ढंककर बांध रखा गया था। श्री यादव ने उसे हटाकर माल्यार्पण किया। स्मारक भी जगह-जगह टूटा-फूटा मिला और वहां अंधेरा था। भाजपा सरकार की इस बाधा को पार कर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पार्टी कार्यकर्ताओं को संदेश में भी दिया है कि अलोकतांत्रिक व असंवैधानिक कार्यों का हर स्तर पर विरोध करना है। हर बाधा को मजबूत इरादों से पार करना ही समाजवादियों की ताकत है।

इस अवसर पर मौजूद हजारों युवाओं, अधिवक्ताओं तथा अल्पसंख्यक समाज की महिलाओं ने जयप्रकाश नारायण अमर रहे और अखिलेश यादव जिंदाबाद के नारे लगाए। सेंटर पर समाजवादी पार्टी के फ्रंटल संगठनों के राष्ट्रीय व प्रदेश अध्यक्षों के साथ नगर निगम के पार्षद, प्रदेशीय पदाधिकारी, पूर्व व वर्तमान विधायक, पूर्व सांसद आदि भी पहुंच गए थे।

यहां पहुंचे लोगों की आमराय थी कि जेपीएनआईसी में लोकनायक जयप्रकाश की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने से पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव को रोकना अलोकतांत्रिक और असंवैधानिक है। यह स्वयं उन भाजपा नेताओं का भी अपमान है जो लोकनारायण के नेतृत्व में इमरजेंसी का विरोध करते हुए जेल गए थे।

लोकनायक के रास्ते पर अखिलेश

राजेन्द्र चौधरी

लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी की जयंती पर जेपीएनआईसी की वर्तमान सरकार द्वारा की जा रही दुर्दशा से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव आहत हैं। 11 अक्तूबर 2023 को जयप्रकाश नारायण अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र (जेपीएनआईसी) स्थित जेपी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम पूर्व निर्धारित था जिसमें अवरोध डालते हुए शासन-प्रशासन ने गेट पर ताला लगा दिया। समाजवादी विचारधारा से निकले अखिलेश यादव ने इस तानाशाही प्रतिबंध को मानने से इनकार कर दिया। अहिंसात्मक प्रतिरोध में उन्होंने गेट लांघकर परिसर में जाकर जेपी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस घटना ने 1942 में अंग्रेजों के खिलाफ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हजारीबाग जेल से ऊंची दीवार फांदकर बाहर आए जयप्रकाश नारायण जी की याद दिला दी।

स्मरणीय है 8 अगस्त सन् 1942 में गांधीजी ने अंग्रेजों भारत छोड़ो प्रस्ताव पर बोलते हुए देशवासियों से 'करो या मरो' का आह्वान किया था। गांधीजी की 9 अगस्त 1942 को गिरफ्तारी के बाद समाजवादी नेताओं जयप्रकाश नारायण, डॉ राममनोहर लोहिया, ऊषा मेहता, अरुणा आसिफ अली आदि ने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया था। जेपी, लोहिया की इसमें प्रमुख भूमिका थी।

जेपीएनआईसी के घटनाक्रम ने निर्विवाद रूप से यह स्थापित कर दिया है कि जनता के नेता अखिलेश यादव समाजवादी आंदोलन की विरासत को नष्ट करने वाले किसी भी

षड्यंत्र को सफल नहीं होने देंगे। समाजवादी विचारधारा की पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता संग्राम है। समाजवादियों ने सदैव स्वतंत्रता आंदोलन के मूल्यों और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया है। अखिलेश यादव देश में सत्ताधारी भाजपा की अधिनायकशाही के खिलाफ लगातार आवाज बुलंद कर रहे हैं। राजनीति में उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता जनता है। वंचित एवं अधिकारविहीन वर्गों को प्रतिनिधित्व दिलाने के लिए उन्होंने सामाजिक न्याय का रास्ता चुना है।

स्मरणीय है, अखिलेश यादव के सुझाव पर सोशलिस्ट नेता जार्ज फर्नांडीज जी की उपस्थिति में जेपीएनआईसी की नींव पड़ी थी जिससे जेपी और आपातकाल के दौरान हुए आंदोलन से आम जनता अवगत हो सके लेकिन किन्हीं कारणों से लोकनायक के जीवन पर आधारित महत्वपूर्ण भवन की कल्पना पूरी तरह साकार नहीं हो सकी। सन् 2012 में एक बार फिर समाजवादी सरकार बनने पर मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने जेपीएनआईसी के सपने को साकार किया। यह विश्वस्तरीय संग्रहालय जय प्रकाश नारायण जी की जीवन यात्रा पर आधारित है जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन एवं आपातकाल के दौरान लोकतांत्रिक संघर्ष का आडियो/वीडियो स्वरूप म्यूजियम भी शामिल है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव अनेक सार्वजनिक मंचों से यह बात दोहराते रहे हैं कि निर्वाचित सरकारों की जिम्मेदारी है कि वे अपने गौरवशाली इतिहास की समूची यात्रा से नई पीढ़ी को भी परिचित कराएं। आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की जीवन यात्रा, कृतज्ञता भाव से जानी जा सके। जेपीएनआईसी समाजवादी आंदोलन का संग्रहालय है इसमें एक समृद्ध पुस्तकालय, जेपी के नेतृत्व में हुई क्रांति पर आधारित वृत्तचित्र जैसे अन्य प्रसंगों से जुड़ी कलाकृतियां शामिल हैं।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव जहां एक ओर लोकतंत्र-संविधान बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं वहीं दूसरी ओर समाजवादी विचारधारा की विरासत को सहेजने के लिए संघर्षरत हैं। बीते दो दशक से अधिक के राजनैतिक जीवन में उनका प्रमुख जोर नई पीढ़ी के लिए बेहतर भविष्य निर्माण की दिशा में प्रयास हैं। सत्तर का दशक संविधान प्रदत्त अधिकारों के हनन का था जिसके खिलाफ छात्रों- नौजवानों ने जेपी की अगुवाई में लोकतंत्र बहाली के सपने को साकार किया। ठीक उसी प्रकार की परिस्थितियां आज भी देश के सामने खड़ी हो गईं हैं। नागरिक अधिकारों को समाप्त करने का षडयंत्रकारी प्रयास जारी है। संविधान संकट में है। आरक्षण समाप्त किया जा रहा है। भारत की विविधता पर खतरा मंड़रा रहा है। ऐसे में अखिलेश यादव संवैधानिक अधिकारों को सही रूप में दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक समाज को उनकी आबादी के अनुपात में हिस्सेदारी दिलाने के लिए सड़क से सदन तक आंदोलनरत हैं। जातीय जनगणना की मांग संसाधनों पर अधिकार से वंचित रह गए वर्गों के न्याय के लिए ही है।

जेपीएनआईसी में गेट लांघते हुए जयप्रकाश नारायण की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अखिलेश यादव ने स्पष्ट कर दिया है कि समाजवादियों द्वारा बताए गए सिविल नाफरमानी का रास्ता खुला हुआ है। समाजवादी विचारधारा के नायकों का सम्मान और समाजवादी विरासत को बचाए रखने के लिए अखिलेश यादव किसी भी स्तर पर समझौता नहीं करेंगे। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह एक सकारात्मक दिशा है।

(लेखक पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव हैं)

श्रद्धेय नेताजी
22 नवंबर 1939 - 10 अक्टूबर 2022

नेताजी के बताए रास्ते पर चलने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी-श्री मुलायम सिंह यादव की पहली पुण्यतिथि पर 10 अक्तूबर को समाजवादी पार्टी ने शिद्दत से उन्हें याद किया, उन्हें श्रद्धांजलि दी और संकल्प लिया कि नेताजी के बताए रास्तों, आदर्शों, संघर्ष को अपनाकर सामाजिक न्याय की लड़ाई को उसकी मंजिल तक पहुंचाएंगे।

सैफई, लखनऊ से लेकर उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश आदि राज्यों में नेताजी को श्रद्धांजलि देने के लिए कार्यक्रम आयोजित हुए।

किसानों, पिछड़ों दलितों, महिलाओं और मजदूरों के उत्थान के लिए आजीवन संघर्ष कर परिवर्तन की राजनीति के नायक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की प्रथम पुण्यतिथि पर समाजवादी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं, समर्थकों ने उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

सामाजिक न्याय के नेताजी के सपनों को पूरा करने के लिए समाजवादी पार्टी ने संघर्ष को और धार देने के लिए प्रतिबद्धता जताते हुए कहा कि अब सामाजिक न्याय की इस लड़ाई में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का साथ देने से ही नेताजी के सपने पूरे होंगे।

10 अक्तूबर को नेताजी की पुण्यतिथि पर मुख्य कार्यक्रम सैफई में नेताजी के समाधि स्थल पर आयोजित किया गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव, प्रमुख राष्ट्रीय महासचिव प्रोफेसर रामगोपाल यादव, राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव, मैनपुरी से लोकसभा सदस्य श्रीमती डिंपल यादव ने परिवार के सदस्यों के साथ नेताजी की समाधि स्थल पर पहुंचकर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। आवास पर हवन-पूजन का कार्यक्रम हुआ।

पैतृक गांव सैफई में नेताजी की समाधि को फूलों से सजाया गया था। नेताजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए प्रदेश भर से हजारों की संख्या में लोग सैफई पहुंचे और श्रद्धांजलि अर्पित की। समाधिस्थल पर 'नेताजी अमर रहें' और 'जब तक सूरज चांद रहेगा, नेताजी का नाम रहेगा' का नारा गुंजायमान होता रहा। समाधि स्थल के पास बने एक विशाल पंडाल से सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रमुख नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भी श्रद्धांजलि देते हुए नमन किया।

नेताजी को श्रद्धांजलि देने के बाद

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि 'जो बसते हैं दिल में लोगों के, वो जाकर भी कहीं न जाते हैं।' श्री यादव ने नेताजी के सिद्धांतों और प्रयासों को नमन करते हुए उन्हें साकार और सार्थक करने की वचनबद्धता के साथ श्रद्धांजलि दी। सैफई में सर्वश्री धर्मेन्द्र यादव, अरविन्द यादव, अरविन्द सिंह गोप, तेज प्रताप तेजू, अक्षय यादव, ओमप्रकाश सिंह, रामजी लाल सुमन, अवधेश प्रसाद, अम्बिका चौधरी, जूही सिंह, नारद राय, प्रदीप कक्का, अनुराग यादव, अंशुल यादव, आदित्य यादव, राजेश यादव, उदयवीर सिंह, राजकुमार राजू विधायक, आशु मलिक, आलोक शाक्य, शकील नदवी, अशोक यादव, अनुराग भदौरिया, जासमीर अंसारी, एस.के. राय, राज जतन राजभर, अपर्णा जैन आदि ने नेताजी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

नेताजी की स्मृति में हुए विभिन्न कार्यक्रम

समाजवादी पार्टी के संस्थापक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की प्रथम पुण्यतिथि पर 10 अक्तूबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में श्रद्धांजलि सभा में नेताजी के त्याग, संघर्ष को याद करते हुए उनके रास्ते पर चलने का संकल्प लिया गया। नेताजी के चित्र पर राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी तथा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने माल्यार्पण किया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता पूर्व सांसद श्री उदय प्रताप सिंह ने की। श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव से संबंधित संस्मरण सुनाए और उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि श्री यादव पिछड़ो, दलितों, वंचितों तथा

अल्पसंख्यकों के हितों एवं सम्मान की लड़ाई लड़ते रहे। जनता से जुड़ाव के चलते ही उन्हें धरतीपुत्र तथा नेताजी कहा गया।

एक अन्य कार्यक्रम में नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव को भारत रत्न दिए जाने की मांग को लेकर समाजवादी छात्र सभा ने नेताजी की प्रथम पुण्यतिथि पर हस्ताक्षर अभियान शुरू किया जो नेताजी के जन्मदिन 22 नवंबर तक चलेगा।

समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय पर 10 अक्तूबर से शुरू किए गए व्यापक हस्ताक्षर अभियान के बारे में समाजवादी छात्र सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ इमरान इदरीश ने बताया कि यह हस्ताक्षर अभियान नेताजी के जन्मदिन 22 नवंबर तक अनवरत चलता रहेगा। हस्ताक्षर अभियान समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल द्वारा हस्ताक्षर कर प्रारम्भ किया गया।

वहीं नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव की प्रथम पुण्यतिथि पर 10 अक्तूबर को लखनऊ नगर निगम पार्षद दल के उपनेता देवेन्द्र सिंह जीतू, तथा वरिष्ठ नेता श्री नवीन धवन बंटी की ओर से लखनऊ के किंग जार्ज मेडिकल विश्वविद्यालय में मरीजों की सुविधा के लिए दो स्ट्रेचर तथा एक व्हील चेयर पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी ने भेंट किया। इस अवसर पर मेडिकल परिसर में तीमारदारों को भोजन भी वितरित किया गया।

नेताजी की प्रथम पुण्यतिथि पर पीडीए लोक जागरण साइकिल यात्रा सैफई पहुंची और श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद लखनऊ वापस आई। साइकिल यात्रियों का जगह-जगह स्वागत किया। यात्रा का नेतृत्व अजीत सिंह पूर्व जिला उपाध्यक्ष लोहिया वाहिनी लखनऊ एवं ज्ञानेन्द्र कुमार ज्ञानू निवर्तमान जिला सचिव समाजवादी पार्टी लखनऊ कर रहे थे। साइकिल यात्रा मथुरा से 6 अक्तूबर को शुरू होकर आगरा, फतेहाबाद, बाह होते हुए 9 अक्तूबर को सैफई पहुंची। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने साइकिल यात्रियों से मिलकर उनका हौसला बढ़ाया। साइकिल यात्रियों ने पुण्यतिथि पर नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव के समाधिस्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित किया। 14 अक्तूबर को पीडीए लोक जागरण यात्रा का लखनऊ में समापन समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी ने किया।

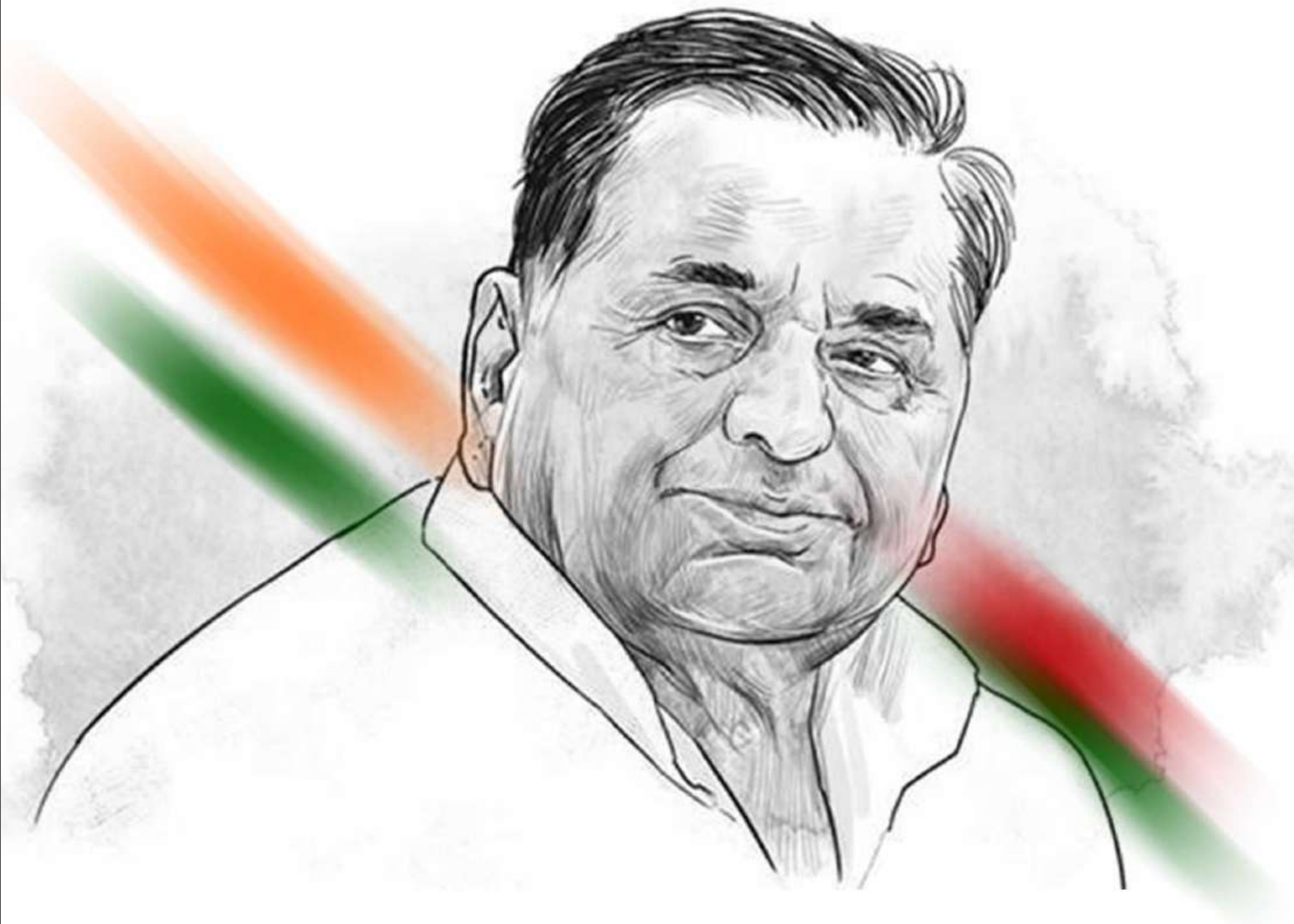

समता और सद्भाव में था
मुलायम सिंह का समाजवाद

अरुण कुमार त्रिपाठी

वरिष्ठ पत्रकार

मुलायम सिंह यादव का मूल्यांकन अभी होना है। उनके मूल्यांकन की कई दृष्टियां हैं। एक दृष्टि वामपंथियों की है जो वर्ग संघर्ष के सिद्धांत के आधार पर उनका मूल्यांकन करेंगे और उन्हें जातिवादी और परिवारवादी भी बता सकती है। जो उनके आरंभिक दौर में धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई की तारीफ करेगी लेकिन बाद के दौर में उनके नरम पड़ने की आलोचना।

दूसरी दृष्टि कांग्रेसियों की है जो उनके साथ सहयोग और टकराव के अनुभव के आधार पर उनका मूल्यांकन करेंगे और भीतर ही भीतर यह ग्रंथि भी रखेंगे कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को खत्म करने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। यानी कांग्रेसी उनके मूल्यांकन में गैर-कांग्रेसवाद के प्रयोग को भुला नहीं पाएंगे। उनका मूल्यांकन बहुजन समाज पार्टी करेगी तो कहेगी कि उन्होंने थोड़े समय के लिए दलितों से सहयोग किया लेकिन फिर आंबेडकरवादी राजनीति को खत्म करने का भरपूर प्रयास किया। मूल्यांकन की एक हिंदुत्ववादी दृष्टि भी है जो एक ओर उन पर अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण का आरोप लगाती है तो दूसरी ओर यह भी कहती है कि वे व्यावहारिक नेता थे जो सबकी बात मानते थे, सबका काम करते थे और किसी से कटुता नहीं रखते थे।

दरअसल मुलायम सिंह यादव के मूल्यांकन की यह सारी दृष्टियां अधूरी और दोषपूर्ण हैं। उनके मूल्यांकन की तीन कसौटियां हैं। पहली कसौटी है समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक बराबरी कायम करना के विचार को पहचानना और उसके लिए संघर्ष करना। दूसरी कसौटी है सामाजिक सद्भाव को कायम रखते हुए किसी संघर्ष को अंजाम देना और वोट की राजनीति में अपनी जगह बनाना। तीसरी कसौटी है उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से संघर्ष की समाजवादी विरासत को आगे बढ़ाते हुए नवउदारवाद के खतरे को पहचानना और उसके प्रति सचेत रहना। मुलायम सिंह ने यह तीनों काम किए और वोट और चुनाव की राजनीति को भी समझदारी से साधा।

सबसे बड़ी मुश्किल यह होती है कि जो लोग समाजवाद की सैद्धांतिक राजनीति को साधते हैं वे चुनाव की राजनीति को नहीं साध पाते हैं और जो चुनाव की राजनीति को साधते हैं वे सिद्धांत को तिलांजलि दे देते हैं। मुलायम सिंह ने दोनों का समन्वय बनाया। उन्होंने एक ओर जमीनी राजनीति करने वाले युवाओं की फौज तैयार की तो दूसरी ओर जनेश्वर मिश्र, कपिलदेव सिंह, मोहन सिंह और बृजभूषण तिवारी जैसे डॉ राम मनोहर लोहिया के वैचारिक और राजनीतिक संघर्ष के साथियों को अपने साथ जोड़कर रखा। उन्होंने समाजवादी विचारों में यकीन रखने वाले बौद्धिकों और पत्रकारों का सदैव सम्मान किया।

मुलायम सिंह समाजवाद का नारा ही नहीं लगाते थे वे यकीन भी करते थे कि एक दिन समाजवाद आएगा। यही वजह है कि उत्तर प्रदेश जैसे सामंतवादी, जातिवादी और सांप्रदायिक प्रदेश में उन्होंने अपनी राजनीतिक सफलता का झंडा बुलंद किया। सामान्य और पिछड़ी जाति के परिवार से निकलकर वे प्रदेश और देश की राजनीति में छाए रहे और तीन बार प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने के अलावा देश के रक्षामंत्री भी बने।

अगर वे सिर्फ वैचारिक दुनिया में विचरण करने वाले बचा बचाकर चलने वाले शंकालु व्यक्ति होते तो महेंद्र सिंह की प्रेरणा से 13 साल की उम्र में गिरफ्तारी न देते और न ही नत्थू सिंह के मार्गदर्शन में चलते हुए समाजवाद और गैर-कांग्रेसवाद की राजनीति में दीक्षित हुए होते। इसी दीक्षा का असर था कि वे 1967 में जसवंत नगर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के उम्मीदवार लाखन सिंह को हराकर एक लाख दो हजार मतों से विजयी हुए। इस चुनाव में कांग्रेस का उम्मीदवार सिर्फ हारा ही नहीं बल्कि उसकी जमानत भी जब्त हुई।

उनके लिए `समाजवादियों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ' महज रैलियों में

लगाया जाने वाला नारा नहीं था। वे वास्तव में समाज को उसी रूप में बनते हुए देखना चाहते थे। यह राजनीति एक ओर समाज के विभिन्न संसाधनों में न्यायोचित बंटवारे की थी तो दूसरी ओर उस सामंती और अभिजात राजनीति को खत्म करने की थी जिसको कहीं न कहीं कांग्रेस और जनसंघ जैसे दल बढ़ावा दे रहे थे। इसी समाज की तलाश में वे पहले डॉ लोहिया के समाजवादी आंदोलन से जुड़े और बाद में चौधरी चरण सिंह के कृषि आधारित समाज की तरक्की के संघर्ष में जुड़े। यह राजनीति अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध थी, नगर केंद्रित सभ्यता के विरुद्ध थी, सामाजिक न्याय और सद्भाव के सीमित आधार को विस्तार देने और हिंदी के पक्ष में थी। समतावादी लोकतांत्रिक राजनीति की तलाश ही उन्हें पहले संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, चौधरी चरण सिंह के भारतीय क्रांतिदल, लोकदल, जनता पार्टी, जनता दल, समाजवादी जनता पार्टी और फिर समाजवादी पार्टी के अंतिम पड़ाव की ओर ले गई।

मुलायम सिंह की राजनीति का अगर दो पंक्तियों में मूल्यांकन करने को कहा जाए तो यही होगा कि वे समतावादी लोकतांत्रिक राजनीति का सद्भावपूर्ण प्रयोग कर रहे थे जिसके लिए उन्होंने मित्र और प्रतिद्वंद्वी बनाए लेकिन शत्रु नहीं बनाए। यही वजह है कि एक समय उन्होंने भारतीय जनता पार्टी और हिंदुत्व की शक्तियों से लड़ने के लिए जान की बाजी लगा दी और उनसे टकराते हुए बाबरी मस्जिद को बचाने के लिए गोली तक चलवाई और बहुसंख्यक हिंदू समाज के शत्रु तक कहलाए। लेकिन समय समय पर उन शक्तियों के साथ सत्ता की साझेदारी भी की और 2019 के आम चुनाव के पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को शुभकामनाएं भी दीं। मुलायम सिंह द्वारा नरेंद्र मोदी को शुभकामना दिए जाने की बड़ी आलोचना होती है और कहा जाता है कि वे बदल गए थे। लेकिन इसे सद्भाव कायम करने के प्रयास के तौर पर क्यों नहीं देखा जाना चाहिए। धर्मनिरपेक्ष ताकतों का लक्ष्य सांप्रदायिकता को हराना है लेकिन उनका भी अंतिम लक्ष्य सांप्रदायिक शक्तियों का हृदय परिवर्तन ही है। यह मुलायम सिंह का बड़प्पन था कि उन्होंने नरेंद्र मोदी को शुभकामनाएं दीं। मुलायम की शुभकामना का अर्थ जियो और जीने दो का वह मंत्र है जो लोकतंत्र का बुनियादी मूल्य है। उसे मुलायम सिंह ने अपने छह दशक के राजनीतिक अनुभव से सीखा था। अब वह मूल्य हिंदुत्ववादियों को न समझ आए तो इसमें मुलायम का क्या दोष। यही समतावादी, सद्भावपूर्ण

लोकतांत्रिक चेतना है जिसकी चाशनी में मुलायम सिंह डूबे हुए थे। मैत्री का मूल्य उसी समाजवादी और लोकतांत्रिक मूल्यों का हिस्सा है जिसे मुलायम सिंह निभाते थे। हिंदुत्ववादी उसे निजी गुण बताकर मुलायम के उस विचार को खारिज कर देते हैं जिसके लिए वे सारे जीवन संघर्ष करते रहे।

लेकिन मुलायम सिंह की सोच यहीं तक सीमित नहीं थी। वे नवउदारवाद के उस खतरे को पहचानते थे जो नए रूप में औपनिवेशिक दासता की आहट था। यही वजह थी कि 1992 में जब समाजवादी पार्टी बनी तो उसके सिद्धांतों में वैश्वीकरण, निजीकरण और उदारीकरण से घोर असहमति प्रकट की गई थी। मुलायम सिंह किशन पटनायक जैसे बौद्धिक समाजवादियों और जनेश्वर मिश्र, बृजभूषण तिवारी और मोहन सिंह की प्रखरता की प्रेरणा से यह देख रहे थे कि यह नवउदारवाद एक दिन लोकतंत्र को ही खा जाएगा। वह उन तमाम उपलब्धियों को नष्ट कर देगा जो कि सामाजिक न्याय के लंबे संघर्ष में दलितों, पिछड़ों, किसानों और मजदूरों ने हासिल किया है। आज 2023 में हम उसे साक्षात देख रहे हैं।

वास्तव में मुलायम सिंह एक ओर ढाई हजार साल की जातिगत गुलामी से लड़ रहे थे तो दूसरी ओर दो सौ सालों की औपनिवेशिक और पूंजीवादी दासता से भी लोहा ले रहे थे। इस बीच विभाजनकारी ब्रिटिश नीतियों से उपजी सांप्रदायिकता ने जब देश और समाज के लिए खतरा पैदा किया तो वे उससे भी टकराने से पीछे नहीं हटे। वास्तव में सांप्रदायिकता से टकराना, जातिवादी शक्तियों के साथ साम्राज्यवाद से ही टकराना था। यह विश्वास का ही असर था कि महात्मा गांधी ने चरखा चलाकर मानचेस्टर की मिलों को डरा दिया और नमक बनाकर ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। उसी विश्वास के सहारे गांधी ने उपवास के माध्यम से मनुष्य के भीतर की हिंसा और नफरत के राक्षस को कई बार शांत किया। वरना बहुत सारे लोग रटते रहते हैं कि जीवों पर दया करो, सदा सत्य बोलो और किसी से नफरत मत करो लेकिन उन विचारों को व्यावहारिक राजनीति का मुहावरा कोई तभी बना पाता है कि जब वह उसमें यकीन करता है। वरना विचार कथा और प्रवचन बनकर रह जाते हैं।

भारत में समाजवादी राजनीति के शिखर पुरुषों में आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण और डॉ राममनोहर लोहिया का नाम लिया जाता है। उन्होंने सत्ता परिवर्तन के साथ व्यवस्था परिवर्तन की राजनीति की। लेकिन इन नामों के बाद व्यापक प्रभाव डालने वाले नेताओं का टोटा है। लेकिन जातिवाद, सांप्रदायिकता और पूंजीवाद की कड़ी धूप में झुलसते भारत के लिए मुलायम सिंह की राजनीति एक छायादार वृक्ष की तरह खड़ी है। इस पहली पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति को सादर नमन।

नेताजी

सच्चे अर्थों में धरती पुत्र थे

जयशंकर पाण्डेय

उत्तर प्रदेश की राजनीति पर पांच दशक से भी ज्यादा समय तक छाये रहने की क्षमता रखने वाले मुलायम सिंह यादव को लोग भले ही क्षेत्रीय क्षत्रप कहे, लेकिन भारत में नफरत, साम्प्रदायिकता और जातिगत वर्चस्व के विरूद्ध संघर्ष करने का जब भी इतिहास लिखा जायेगा तो उनका नाम बहुत प्रमुखता के साथ दर्ज किया जायेगा।

श्री मुलायम सिंह यादव जी से मेरा पहला परिचय संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता सम्मेलन लखनऊ में पानदरीबा पार्टी कार्यालय पर हुआ था और श्री भगवती सिंह ने जो उस समय कार्यालय के प्रभारी और प्रदेश सचिव थे, उन्होंने परिचय कराया था। देश में आपात काल खत्म होने के बाद वर्ष 1977 में पूरे देश में चुनाव हुए थे। उत्तर प्रदेश में अयोध्या और लखनऊ में उपचुनाव होना था।

प्रदेश में श्री राम नरेश यादव जी के मुख्यमंत्रित्व में सरकार बन चुकी थी। श्री मुलायम सिंह यादव जी सहकारिता एवं पशुपालन के मंत्री थे। मुझे जनता पार्टी की ओर से अयोध्या विधानसभा से उपचुनाव लड़ने का मौका मिला।

मुलायम सिंह जी अयोध्या के उपचुनाव में लगभग 27 दिन विधानसभा क्षेत्र के हर गांव में गये और लोगों से मिलकर जनता पार्टी को समर्थन दिलाया। जिससे कांग्रेस पार्टी के साथ कांटे के संघर्ष में जनता पार्टी की जीत हुई। दरअसल उनमें समाजवादी विचारधारा की कसौटी पर संघर्ष का वह तत्व था जिसने नेताजी की कामयाबी की राह प्रशस्त की।

वर्ष 1967 में श्री यादव संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के बैनर पर इटावा के जसवंत नगर सीट से चुनाव लड़े और विजयी हुए। उस समय प्रख्यात समाजवादी नेता श्री रामसेवक यादव संसोपा के राष्ट्रीय महामंत्री थे। जिनका पूरा आशीर्वाद मुलायम सिंह यादव के साथ था और उन्हीं के साथ-साथ

डॉ राममनोहर लोहिया, मधु लिमये, राजनारायण, कर्पूरी ठाकुर, कमाण्डर अर्जुन सिंह भदौरिया, जार्ज फर्नांडीज, जैसे वरिष्ठ समाजवादी नेताओं का आशीर्वाद मुलायम सिंह जी के साथ उनकी संघर्षशीलता के कारण सदैव रहा।

श्री मुलायम सिंह यादव के मन में समाजवादी विचारधारा के प्रति अत्यधिक लगाव रहा। लोहिया की राजनैतिक विचारधारा और चौधरी चरण सिंह की दृढ़ता का संगम आजीवन मुलायम सिंह जी में दिखा। उनके राजनीतिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण वर्ष 1988 था। उसी वर्ष में उत्तर प्रदेश में दो विधानसभा और एक लोकसभा का उपचुनाव होना था। ये उपचुनाव मुलायम सिंह के लिए बड़ा परिवर्तनकारी साबित हुआ और इस मोड़ ने उन्हें धरती पुत्र बनाकर देश का नेता बना दिया। उत्तर प्रदेश की टाण्डा विधानसभा (तत्कालीन जनपद फैजाबाद) तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश की छपरौली विधानसभा जिला मेरठ तथा इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र में उपचुनाव होने थे।

टाण्डा सीट तत्कालीन कैबिनेट मंत्री तथा कद्दावर नेता पूर्वांचल के गांधी श्री जयराम वर्मा के निधन से खाली हुई थी। टाण्डा सीट पर श्री गोपीनाथ वर्मा लोकदल से प्रत्याशी थे। पार्टी की तरफ से टाण्डा सीट पर चुनाव जिताने का प्रभार श्री मुलायम सिंह यादव को सौंपा गया था।

उस चुनाव की विशेषता यह थी कि मुलायम सिंह जी वैसे तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश से सम्बंध रखते थे लेकिन टाण्डा जैसी पूर्वांचल की सीट पर चुनाव कार्य देखने के कारण पूर्वांचल में उनका प्रभाव तेजी के साथ बढ़ा। मुलायम सिंह जी ने अपनी राजनैतिक सूझ-बूझ और अथक परिश्रम से टाण्डा विधानसभा सीट पर श्री गोपीनाथ वर्मा को जिता कर पूरे प्रदेश में अपनी धाक जमा ली। इसी जीत ने मुलायम सिंह यादव जी को पूरे उत्तर प्रदेश का नेता बना दिया और आगे चल कर उनके मुख्यमंत्री बनने में सहायक हुआ।

उत्तर प्रदेश में काफी संघर्ष के बाद मुलायम सिंह यादव जी जब मुख्यमंत्री बने तो उनके सर पर कांटों का ताज था। अयोध्या मुद्दे पर सीमित शक्ति का प्रयोग करते हुए उन्होंने संविधान की मर्यादा को बचाने का प्रयास किया और कहा कि राम मन्दिर का निर्माण दोनों पक्षों की सहमति से अथवा न्यायालय के निर्णय से ही होगा। राम मन्दिर के निर्माण के सम्बंध में श्री मुलायम सिंह जी के द्वारा कही गयी बात ही सत्य हुई और आज उच्चतम न्यायालय के आदेश से राम मन्दिर का निर्माण हो रहा है।

मुलायम सिंह यादव जी ने मुख्यमंत्री के रूप में लोक सेवा आयोग में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी लागू करके लोक सेवा आयोग के प्रतियोगी परीक्षार्थियों को बहुत बड़ा लाभ पहुंचाया। जिससे ग्रामीण अंचल के हजारों परीक्षार्थियों को अधिकारी बनने का मौका मिला। उन्होंने पहली बार किसानों का 10 हजार रूपए का कर्ज माफ किया, चुंगी समाप्त किया, बेरोजगारी भत्ता, कन्या विद्या धन योजना का लाभ दिया और लड़कियों को शिक्षा के लिये ब्लाक स्तर पर महाविद्यालय की स्थापना करायी।

रक्षामंत्री के रूप में मुलायम सिंह यादव देश के पहले रक्षामंत्री थे जिन्होंने सैनिकों को जो सम्मान दिया वो किसी ने नहीं दिया था। मुलायम सिंह यादव जी ने अपने कार्यकर्ताओं और नेताओं को परिवार का सदस्य माना। सुबह पांच बजे से लेकर देर रात तक कार्यकर्ताओं से संवाद और सम्पर्क बनाकर समाजवादी पार्टी को मजबूत किया। मुझे याद है 1993 में विधानसभा के चुनाव में फैजाबाद गुलाबबाड़ी के मैदान में चुनावी सभा का आयोजन था। गुलाबबाड़ी का मैदान बरसात के कारण पानी से भर गया था। हेलीकॉप्टर उतरने के लिए बहुत ही कम जगह थी। पायलट ने हेलीकाप्टर उतारने से मना कर दिया। मुलायम सिंह जी ने पायलट से कहा कि मैं फैजाबाद में नहीं बोलूंगा तो जयशंकर का नुकसान हो जायेगा। आप हेलीकॉप्टर को धीरे-धीरे नीचे करो मैं जमींन पर कूद जाऊंगा, जब तक मीटिंग चलेगी, तब तक आप ऊपर उड़ते रहना और जब इशारा हो जायेगा तब नीचे आ जाना, मैं फिर हेलीकॉप्टर में चढ़ लूंगा, लेकिन पायलट ने जान जोखिम में डालकर हेलीकॉप्टर को गुलाबबाड़ी के मैदान में कोने में किसी तरह से उतारा, और मुलायम सिंह जी ने जनसभा की, और अपनी बात पर कायम रहे। शायद इसलिये उनके सम्मान में कहा जाता था कि जिसने कभी न झुकना सीखा उसका नाम मुलायम है।

(लेखक पूर्व विधायक एवं समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव हैं)

राजनीति के महारथी थे
मुलायम सिंह यादव

मधुकर त्रिवेदी
वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. राम मनोहर लोहिया और चौधरी चरण सिंह के सानिध्य में श्री मुलायम सिंह यादव ने राजनीति की शुरुआत की। वे राष्ट्रीय राजनीति की मुख्य भूमिका में रहे। इसकी पृष्ठभूमि में उनकी दीर्घकालीन संघर्ष यात्रा है। वे खुद कहते थे कि संकल्प, साहस और संघर्ष के बूते ही सफल हुआ जा सकता है। उनके पूरे जीवन पर गौर करें तो पायेंगे कि उनकी ताकत उनका धारा के विपरीत तैरने का साहस था।

साहसिक निर्णय लेने पर उनका व्यक्तित्व अलग निखरता रहा। याद करिए 15 वर्ष की उम्र में नहर रेट आन्दोलन में जेल यात्रा। बड़े-बूढ़े और मजिस्ट्रेट तक घर जाने को कह रहे थे पर बालक मुलायम निर्भय जेल जाने को तैयार। वर्ष 1953 में दलित गंगा प्रसाद जाटव के घर खाना खा आए तो सामाजिक बहिष्कार की नौबत आ गयी। एक बाल्मीकि के घर भी बेहिचक दावत खा आए। यह तब की बात है जब जाति की जंजीरें हिलाने की कोई हिम्मत नहीं करता था। यह बड़ी जोखिम का काम था।

बचपन से चुनौती लेने और अपनी बात मनवाने वाले किशोर को पिताश्री श्री सुघर सिंह ने ठीक ही पहलवानी के दंगल में उतारा था। इससे एक तो मिट्टी से उनका गहरा रिश्ता जुड़ा और दूसरे दांवपेंच सीखकर दंगल में अपने से बड़े पहलवानों को चित करने का जज्बा भी मजबूत हुआ। 1958 में हाईस्कूल परीक्षा पास करते ही विवाह हो गया। तब भी वे पढ़ाई से विरत नहीं हुए। कालेज छात्रसंघ के अध्यक्ष बने। बीटी करके कालेज में नागरिक शास्त्र के प्रवक्ता बने। सैफई गांव, जहां वे पैदा हुए, इटावा जो कर्मभूमि बनी, से लखनऊ और फिर दिल्ली तक की यह यात्रा सड़क से संसद तक की संघर्ष यात्रा है। गांव-गरीब, किसान-नौजवान के मसलों से वे हमेशा जुड़े रहे। उनके प्रशंसक उन्हें धरती पुत्र कहते हैं, वे नारा लगाते हैं- 'जिसने कभी न झुकना सीखा, उसका नाम मुलायम है।'

1967 में सबसे कम उम्र के विधायक बने मुलायम सिंह यादव 1977 में सहकारिता मंत्री बने। सहकारिता आंदोलन को नौकरशाही के जकड़न से अलग करने के कई निर्णय लिये। 5 दिसम्बर 1989 को जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तब उनके सामने कई चुनौतियां थीं। समस्यायें मुंह बाये खड़ी थी। तत्कालीन केन्द्र सरकार की ओर से छल प्रपंच की राजनीति का विद्रूप सामने आने लगा था। घटकवाद का झगड़ा तो था ही, बदहाल उत्तर प्रदेश की पटरी से उतरी विकास गति को भी रास्ते पर लाने का काम था। साम्प्रदायिकता का उन्माद फैलने लगा था। किसान आंदोलन कानून व्यवस्था को ललकार रहा था।

खुद को केन्द्र की कठपुतली न बनने देने के संकल्प के साथ श्री मुलायम सिंह यादव की साम्प्रदायिकता के खिलाफ जंग ने उन्हें धर्मनिरपेक्षता के जुझारू सेनापति के रूप में विख्यात बनाया। अयोध्या मुद्दे से उपजी स्थितियां विषम थीं किन्तु श्री मुलायम सिंह ने तब साफ कहा कि 'हम जीतें या हारें, सरकार में रहे, न रहें, धर्मनिरपेक्षता हमारा मुद्दा है। हम इसकी लड़ाई लड़ते रहेंगे।' उनका मत हमेशा यही रहा कि देश कानून से चलेगा, आस्था से नहीं। संविधान की रक्षा के लिए उठाए गए उनके कदम से वे धर्मनिरपेक्ष

ताकतों के सबसे प्रिय नेता बन गए। 1991 में जब कल्याण सिंह की सरकार बनी तो बकौल श्री चन्द्रशेखर विरोधियों ने मुलायम सिंह यादव की राजनीतिक अन्त्येष्टि ही करने का इरादा कर लिया था।

लेकिन श्री मुलायम सिंह यादव ने बहुजन समाज पार्टी के साथ दुबारा सरकार बनाई। 4 दिसम्बर 1993 को श्री मुलायम सिंह यादव फिर मुख्यमंत्री बने और दो वर्ष तक सरकार चली। फिर 29 अगस्त 2003 से 12 मई 2007 तक मुख्यमंत्री रहे। 01 जून 1996 से 19 मार्च 1998 तक देश के रक्षा मंत्री रहे।

श्री मुलायम सिंह ने अपने कार्यकाल में सिविल सेवाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की। रक्षा मंत्री के रूप में सैनिक शहीदों के अन्तिम संस्कार का इंतजाम कराया। पहले सैनिक के घर उसकी टोपी, मेडल ही जाती थी। नेताजी ने विधवाओं को पति के अन्तिम दर्शन करने की व्यवस्था की।

भाजपा की साम्प्रदायिकता का समाजवादी पार्टी द्वारा नवम्बर 1992 में गठन के साथ ही विरोध शुरू किया गया। फासीवादी ताकतों को दिल्ली पर कब्जा करने से रोकने में समाजवादी पार्टी और श्री मुलायम सिंह यादव की भूमिका से सभी परिचित हैं। आजीवन वे समाजवाद, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता की लड़ाई लडते़ रहे। उनके विरोधी भी इस मायने में उनके कायल रहे हैं। अलोकप्रिय होने का खतरा उठाकर भी उन्होंने कभी साम्प्रदायिक तत्वों के सामने कमजोरी नहीं दिखाई। वे कहते थे कि बिना अल्पसंख्यकों को साथ लिये समाज में समता और संतुलन नहीं बना रह सकता है। मुस्लिम ही क्यों वे पिछड़ों और महिलाओं को भी आरक्षण देने के हामी रहे। सामाजिक न्याय को अमली जामा पहनाने के लिए वे सतत प्रयत्नशील रहे। वे सामाजिक सद्भाव और एकता के पक्षधर रहे। उनकी चिन्ता के केन्द्र में गांव, गरीब, किसान और कमजोर वर्ग के लोग रहे हैं। राजनीति की शतरंज का उनसे बड़ा खिलाड़ी कोई और नहीं हुआ। विरोधी को विरोधी के ही दांव से चित करने में उन्हें महारथ हासिल थी। उन्हें भूलना आसान नहीं होगा।

देवरिया कांड

अखिलेश ने मृतकों को श्रद्धांजलि दी सरकार पर बरसे

बुलेटिन ब्यूरो

देवरिया के फतेहपुर गांव में 2 अक्तूबर को हुई 6 हत्याओं से दुखी समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 16 अक्तूबर को फतेहपुर गांव पहुंचे और उन्होंने इस कांड में मारे गए सभी छह लोगों को श्रद्धांजलि दी।

श्री अखिलेश यादव ने बाद में इस हत्याकांड के लिए सरकार की नाकामी को जिम्मेदार ठहराया।समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने पहले ही पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं से साफतौर पर कह दिया था कि वह संवेदना प्रकट करने आ रहे हैं लिहाजा न तो उनका स्वागत किया जाए और न ही किसी तरह की नारेबाजी। श्री यादव के इस कदम की सराहना हो रही है।

श्री अखिलेश यादव 16 अक्तूबर को फतेहपुर गांव पहुंचे। उन्होंने सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचकर हत्याकांड की जानकारी ली तथा संवेदना प्रकट की। उन्होंने कहा कि ऐसी दर्दनाक घटना उत्तर प्रदेश में पहले नहीं हुई। उन्होंने घटना की कड़े शब्दों में निंदा की।

श्री अखिलेश यादव पहले सत्य प्रकाश दुबे के घर पहुंचे और घटना के संबंध में जानकारी ली। यहां उन्होंने सत्यप्रकाश दुबे, उनकी पत्नी व पुत्रियों एवं पुत्र के चित्रों पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

उसके बाद सपा प्रमुख ने दिवंगत प्रेम प्रकाश यादव के घर पहुंचकर श्रद्धांजलि दी और

परिजनों से मिलकर उन्हें सांत्वना दी। उन्होंने प्रेमचंद यादव की पत्नी और बेटियों से बात की।

श्री अखिलेश यादव ने यहां कहा कि यह कांड शासन-प्रशासन और न्याय के लिए बड़ी चुनौती है। सरकार ने स्वीकार किया है कि उसकी कमी है। छोटे अधिकारियों से गलती हुई है इसीलिए उनके खिलाफ कार्रवाई हुई। इस घटना को हम विधानसभा में उठाएंगे। उन्होंने कहा कि अधिकारी जिस भी स्तर के हों उन्हें न्याय करना चाहिए। प्रेमचंद यादव के परिवार को न्याय मिलना चाहिए। समाज संतुलित न्याय चाहता है। सरकार न्याय नहीं दिला पा रही है, इसीलिए जनता खेतों में और प्रेमचंद यादव के घर के आसपास खड़ी है।

श्री यादव ने कहा कि देवरिया में जो घटना हुई है वह गलत है। देवरिया के जिलाधिकारी ने खुद कहा कि घटना बदले में हुई है। अगर प्रेमचंद यादव की हत्या न हुई होती तो मासूमों की जान नहीं जाती। प्रेमचंद यादव की हत्या धारदार हथियार से हुई। जीरो टॉलरेंस की बात करने वाली सरकार अभी तक यह सच्चाई सामने नहीं ला पाई है कि पहली घटना कैसे हुई?

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि प्रेमचंद यादव को बुलाकर धोखे से मारा गया। सरकार इस बात को क्यों छुपा रही है? दोनों घरों के बीच दूरी है। आखिर क्या वजह रही कि प्रेमचंद यादव सुबह ही सुबह दूसरे परिवार के घर गये और उनकी हत्या हो गयी। श्री यादव ने कहा कि बुल्डोजर संस्कृति लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। अगर बुल्डोजर से ही न्याय शुरू हो जाएगा तो अगली सरकारें भी यही करेंगी। देवरिया में दुखद घटना हुई है। दोनों परिवारों ने अपनों को खोया है। मेरी दोनों परिवारों से मिलने की जिम्मेदारी थी इसलिए मैं दोनों परिवारों के घर गया।

श्री यादव ने कहा कि हम सरकार से मांग करते हैं कि दोनों परिवारों की मदद करें और न्याय दिलाएं। मुख्यमंत्री जी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं। उन्हें इस घटना का राजनीतिक लाभ नहीं लेना चाहिए। योगी का मतलब होता है दूसरे का दुःख अपना दुःख समझे। किसी के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा समाज को बांट रही है। समाज इसे समझ रहा है। इस सरकार की नीयत साफ नहीं है।

ASIAN
USHA
SUBHASH ELECTRIC

सरकार को दोनों परिवारों के लोगों से मिलना चाहिए था। भाजपा सरकार प्रेमचंद यादव के रिश्तेदारों को परेशान कर रही है। प्रेमचंद यादव के परिवार की एफआईआर तक नहीं दर्ज कर रही है। सरकार इस तरह की घटनाएं रोके। सभी के साथ न्याय करे। भाजपा के नेता और कार्यकर्ता इस घटना पर राजनीति कर रहे हैं और इसका लाभ लेना चाहते हैं।

मध्य प्रदेश की जनता परिवर्तन चाहती है

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 27 व 28 सितंबर को दो दिवसीय यात्रा पर मध्य प्रदेश पहुंचे और संगठन के विस्तार और मजबूती पर स्थानीय नेताओं से विचार विमर्श किया। श्री यादव का मध्य प्रदेश में भव्य स्वागत हुआ। श्री यादव ने मध्यप्रदेश में दो विशाल जनसभाओं को भी संबोधित किया।

उन्होंने भाजपा की गलत नीतियों-कार्यक्रमों और जनविरोधी कामकाज को गिनाते हुए इस बार मध्य प्रदेश में भाजपा को हराने का आह्वान किया। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश में इस बार परिवर्तन तय है क्योंकि जनता भाजपा से बहुत नाराज है। मध्य प्रदेश दौरे के दौरान श्री यादव ने एक आदिवासी परिवार के साथ उनके आवास पर भोजन कर सबका दिल जीत लिया।

27 सितंबर को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने रीवां जिले के सिरमौर में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव की तैयारी में बहुत आगे है। मध्य प्रदेश की जनता परिवर्तन को तैयार है। भाजपा ने मध्य प्रदेश को बर्बाद कर दिया है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा महिलाओं को टिकट भले ही न दे लेकिन समाजवादी पार्टी महिलाओं को 20 फीसदी टिकट देगी। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी ने पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक वर्ग और अन्य महिलाओं को हमेशा मौका दिया। आगे बढ़ाया। तमाम विरोध के बाद भी नेताजी मुलायम सिंह यादव ने फूलन देवी को टिकट दिया और लोकसभा में पहुंचाया। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी और इंडिया गठबंधन जीतेगा। समाजवादी पार्टी जातीय जनगणना कराकर सभी लोगों को उनकी आबादी के हिसाब से हक और सम्मान देने का काम करेगी। समाजवादी पार्टी और दक्षिण भारत के कई नेता बहुत लंबे समय से देश में जातीय जनगणना की मांग कर रहे हैं। खुशी की बात है कि अब कांग्रेस भी जातीय जनगणना की बात कर रही है। यह बड़ा बदलाव है। उन्होंने मध्य प्रदेश की जनता को आगाह किया कि वह भाजपा के झूठे विज्ञापनों और धोखे में नहीं आए।

जनसभा को मध्य प्रदेश समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रामायण सिंह पटेल, प्रदेश प्रभारी व्यासजी गोंड, विश्वनाथ सिंह

मरकाम, अनिल प्रधान, दद्दन सिंह आदि ने भी संबोधित किया। इससे पूर्व दो दिवसीय दौरे पर खजुराहो पहुंचने पर कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया।

28 सितंबर को श्री अखिलेश यादव ने खजुराहो में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि मध्य प्रदेश में परिवर्तन होना निश्चित है। समाजवादी पार्टी का लक्ष्य मध्य प्रदेश में भाजपा को हराना है। मध्य प्रदेश में बड़ी संख्या से समाजवादी नेता निकले हैं। यहां समाजवादियों के लिए बड़ी गुंजाइश है, समाजवादी विचारधारा का भविष्य बहुत बड़ा और अच्छा है। समय-समय पर समाजवादी पार्टी के विधायक मध्य प्रदेश में चुनाव जीतते रहे हैं और जनता के हक और अधिकार की लड़ाई लड़ते रहे हैं।

उन्होंने बताया कि हमने मध्य प्रदेश में संगठन और नेताओं के साथ बातचीत की है। समाजवादी पार्टी का संगठन जिन क्षेत्रों में मजबूत है और जहां पर हमारे प्रत्याशी जीतने की स्थिति में हैं, वहां पर चुनाव लड़ेंगे। पिछले विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने एक सीट जीती और कई स्थानों पर बहुत मजबूती से चुनाव लड़ा लेकिन भाजपा ने साजिश और षडयंत्र के तहत सपा प्रत्याशियों को हरवा दिया।

श्री यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी पीडीए यानी पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यकों को एकजुट करके भाजपा को हराने की रणनीति पर काम कर रहे हैं।

मध्य प्रदेश में भी भाजपा को हराने और सत्ता परिवर्तन में समाजवादियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। समाजवादी पार्टी को सरकार में आने का मौका मिला तो मध्य प्रदेश में आदिवासियों को उनका हक और सम्मान दिलाएंगे और घर बनाने के लिए

लाख रुपये दिए जाएंगे। समाजवादी पार्टी मध्य प्रदेश में जातीय जनगणना कराकर सभी जातियों को उनका हक और सम्मान दिलाएगी।

मध्य प्रदेश दौरे के दूसरे दिन 28 सितंबर को श्री अखिलेश यादव ने राजनगर क्षेत्र में स्थित सिंगरो गांव में एक आदिवासी परिवार के घर पर भोजन किया। घर की महिलाओं ने उत्साह पूर्वक स्वागत कर उन्हें भोजन कराया। आदिवासी परिवार में भोजन कर श्री यादव ने सभी का दिल जीत लिया है।

जातीय जनगणना से ही सामाजिक न्याय संभव

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने समाजवादी बाबा साहब वाहिनी और समाजवादी पार्टी अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ व पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ की अलग-अलग बैठकों में जातीय जनगणना पर फिर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बिना जातीय जनगणना कराए दलित समाज व पिछड़ा वर्ग का उत्थान नहीं हो सकता।

श्री यादव ने बहुजन समाज के बीच जाकर समाजवादी पार्टी को मजबूत करने का भी संकल्प लेने को कहा। इन बैठकों में श्री यादव ने चुनावी समर 2024 के लिए कार्यकर्ताओं से सुझाव लिए और उन्हें बताया कि भाजपा को हराने के लिए सभी एकजुट होकर लग जाएं।

8 अक्तूबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ के डॉ राममनोहर लोहिया सभागार में समाजवादी बाबा साहब वाहिनी और समाजवादी पार्टी अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने संबोधित किया। इस बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का बाबा साहब अम्बेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मिठाई लाल भारती तथा अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल भारती ने स्वागत किया।

बैठक में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने लोकतंत्र के लिए खतरा पैदा कर दिया है। भाजपा बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर के बनाए संविधान को बदलने की तैयारी में है। वह जातीय जनगणना नहीं चाहती है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के एनडीए को पीडीए- (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) हराएगा। श्री अखिलेश यादव ने कहा कि बैठक में समाजवादी पार्टी के विधायकों, नेताओं और कार्यकर्ताओं के मिले सुझावों को लेकर बहुजन समाज के बीच जाएंगे और

समाजवादी पार्टी को मजबूत करेंगे।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जातीय जनगणना होने से ही सभी को हक और सम्मान मिल पाएगा। जातीय जनगणना से सभी सम्मान के साथ जी सकेंगे। उन्होंने कहा कि जातीय जनगणना के बिना सामाजिक न्याय संभव नहीं है।

बैठक में सभी ने भारतीय संविधान की शपथ ली। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि दलित समाज को हर दल से उपेक्षा मिली है। समाजवादी पार्टी में उन्हें पूरा सम्मान मिला है।भाजपा को पराजित करने के लिए समाजवादी और अम्बेडकरवादी एकजुट रहेंगे। समाजवादी पार्टी ही संविधान बचा पाएगी। हर तरह की विषमता के विरुद्ध समाजवादी ही संघर्षरत रहे हैं।

बैठक में सर्वश्री पूर्व मंत्री इंद्रजीत सरोज, राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल, तूफानी सरोज, ब्रजेश कठेरिया, त्रिभुवन दत्त, मनोज पारस, आशुतोष मौर्य, गौरव रावत, श्याम सुन्दर भारती, बेचई सरोज, डॉ रागिनी सोनकर, पूजा सरोज, गीता शास्त्री, राघवेन्द्र कुमार सिंह, राजेन्द्र कुमार आदि मौजूद रहे।

13 अक्तूबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय पर समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ उप्र द्वारा आयोजित कश्यप, निषाद, बिन्द धीमर, मल्लाह, कहार, केवट, गोडिया, रैबार, तुरैहा, मांझी, मझवार, गोंड और मछुआ समाज की बैठक को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार की गलत नीतियों के चलते पिछड़ों, दलितों और अल्पसंख्यकों के साथ अन्याय हो रहा है।

बैठक में विभिन्न समाजों के प्रतिनिधियों ने कहा कि भाजपा ने पिछड़ी जातियों को धोखा दिया है। समाजवादी सरकार में इन सभी पिछड़ी जातियों के साथ न्याय हुआ था। इस समाज का समाजवादी पार्टी पर भरोसा है। पिछड़े समाज के नेताओं ने विश्वास दिलाया कि सन् 2024 के लोकसभा चुनाव में सभी पिछड़ी जातियां समाजवादी पार्टी के साथ रहेंगी और पूरा पिछड़ा समाज एकजुट होकर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को भारी मतों से जिताने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

बैठक की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री लालता प्रसाद निषाद ने की जबकि संचालन पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष व पूर्व एमएलसी डॉ राजपाल कश्यप किया। बैठक में पूर्व कैबिनेट मंत्री राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के अलावा विशम्भर प्रसाद निषाद, पूर्व सांसद फूलन देवी की बहन श्रीमती रुक्मिणी देवी, पूर्व राज्यमंत्री किरन पाल कश्यप, हाकिम लाल बिंद विधायक, भीम निषाद, गोरखपुर से समाजवादी पार्टी की मेयर प्रत्याशी एवं फिल्म अभिनेत्री सुश्री काजल निषाद, अमरेन्द्र निषाद, रामरति बिन्द, मांगेराम कश्यप, राम नारायण बिन्द आदि भी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण शिविर में सिखाए चुनाव जीतने के गुर

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के लोक जागरण अभियान के तहत दो दिवसीय समाजवादी प्रशिक्षण शिविर प्रतापगढ़ में लगाया गया। शिविर में कार्यकर्ताओं को चुनाव 2024 के लिए बूथ स्तर पर संगठन की मजबूती के गुर बताए गए।

4 व 5 अक्तूबर को दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में वरिष्ठ नेताओं ने कार्यकर्ताओं को चुनावी तौर तरीके और विजय पताका लहराने के नुस्खे सिखाए।

5 अक्तूबर को समापन करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता पार्टी के विचारों और कार्यक्रमों को लेकर गांव-गांव, घर-घर जाएंगे और भाजपा को हराने का संकल्प लेंगे। उन्होंने कहा कि देश की जनता महंगाई, बेरोजगारी से त्रस्त है। जनता परिवर्तन चाहती है। इंडिया गठबंधन इस बार लोकसभा चुनाव में पीडीए के साथ मिलकर भाजपा को हराएगा।

इससे पहले आयोजन स्थल राजकीय इंटर कॉलेज मैदान में शिविर के पहले दिन 4 अक्टूबर को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव कार्यकर्ताओं से मुखातिब हुए। प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने किया।

समाजवादी प्रशिक्षण शिविर के पहले दिन के सत्र में लोकतंत्र का भविष्य, वोटर लिस्ट प्रबंधन, समाजवाद और लोकतंत्र, जातीय जनगणना है जरूरी, भाषा एवं शिष्टाचार, सोशल मीडिया, राजनीति में युवाओं की भागीदारी, सामाजिक न्याय, वर्तमान सरकार में पिछड़ों की स्थिति तथा चुनाव प्रबंधन पर चर्चा हुई।

सत्र के पहले दिन प्रो बी पाण्डेय पूर्व उप कुलपति, डा लक्ष्मण यादव प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, इंद्रजीत सरोज, मौलाना इकबाल कादरी, राजकुमार भाटी, श्री रामअचल राजभर तथा श्री राजेन्द्र कुमार विधायक ने भी विचार रखे।

शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश की सौ करोड़ जनता भाजपा के खिलाफ है। भाजपा डरी हुई है। भाजपा सरकार विपक्षी नेताओं को फर्जी केसों में फंसा रही है। भाजपा जिससे घबराती है उसे झूठे मामले में फंसाकर गिरफ्तार करती है। ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स तथा अन्य सरकारी संस्थाएं भाजपा के प्रकोष्ठ हैं और उनके

संगठन के हिस्सा हैं। पहले पत्रकारों के घरों पर छापेमारी फिर आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह के घर छापेमारी और गिरफ्तारी। यह सब भाजपा के कहने पर हो रहा है।

पूर्व विधायक श्याद अली के निधन से शिविर में शोक प्रस्ताव पारित कर शेष कार्यवाही स्थगित कर दी गई । श्री अखिलेश यादव ने प्रशिक्षण शिविर में आये सभी कार्यकर्ताओं और नेताओं को धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि हम लोग पूर्व विधायक श्याद अली के निधन से दुःखी है। उनके अचानक निधन से पार्टी को बड़ा नुकसान पहुंचा है। श्याद अली पार्टी के बहुत ही निष्ठावान नेता थे। हम सभी लोग उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। दुःख की इस घड़ी में हम सभी परिवार के साथ हैं। इससे पहले प्रशिक्षण शिविर में सभी नेताओं, कार्यकर्ताओं ने दो मिनट का मौन रखकर पूर्व विधायक श्याद अली को श्रद्धांजलि दी।

बाद में श्री यादव ने मीडिया से बातचीत करते हुए देवरिया की घटना के लिए भाजपा सरकार और प्रशासन को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा कि अगर प्रशासन और सरकार ने समय पर कार्रवाई की होती तो देवरिया में 6 लोगों की हत्याएं नहीं होतीं।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा पीड़ित परिवारों को न्याय दिलाने के बजाय घटना से लाभ लेना चाहती है। श्री यादव ने कहा कि देवरिया की घटना उदाहरण है कि अधिकारियों और सरकार ने न्याय नहीं किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की ध्वस्त कानून व्यवस्था की तरह भ्रष्टाचार भी चरम पर है। हर विभाग और हर जगह भ्रष्टाचार है। बजट की लूट हो रही है। भाजपा सरकार में भ्रष्टाचार किस स्तर पर पहुंच गया है इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। तहसील और थानों के भ्रष्टाचार से जनता त्रस्त है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जबसे यह सरकार आई है, सड़कों को गड्ढ़ामुक्त नहीं कर पाई। सड़कों में गड्ढे ही गड्ढे हैं। गड्ढामुक्त के नाम पर आवंटित बजट भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया। इस सरकार ने इन्वेस्टमेंट मीट में लाखों करोड़ के एमओयू का दावा किया गया लेकिन कहीं पर भी कोई फैक्ट्री नहीं लगी। किसानों के धान खरीद की कोई तैयारी नहीं है। बिजली नहीं आती है। भाजपा सरकार ने एक यूनिट बिजली का उत्पादन नहीं बढ़ाया। बिजली का बिल बढ़कर आता है। गरीबों को इलाज नहीं मिल रहा है। प्रशिक्षण शिविर को पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री लालजी वर्मा, सलीम इकबाल शेरवानी विधायक आर के सिंह पटेल, पूर्व एमएलसी एस पी सिंह पटेल ने सम्बोधित किया।

फोटो स्रोत : गूगल

गांधी
और महिला सशक्तिकरण

अरविन्द मोहन
लेखक, वरिष्ठ पत्रकार

यह चीज बहुत सुकून देने वाली और हौसला बढ़ाने वाली है कि गांधी और उनके द्वारा विकसित महिला नेतृत्व वाले विषय पर पढ़ाई और किताब लिखने की चर्चा शुरू होने के बाद से छोटे-बड़े व्याख्यानों के जितने न्यौते मिले लगभग सारे ही इसी विषय के इर्द-गिर्द थे और किताब का जिक्र होते ही श्रोता किताब और उसके प्रकाशन की जानकारी भी मांग रहे थे। अगर सभा में लड़कियां और औरतें हुईं तो उनका उत्साह और खुशी देखने लायक चीज थी। जब अपनी पढ़ाई की सीमाओं का उल्लेख करने की बात करके मैं श्रोताओं, खासकर लड़कियों से इन गांधीवादी नायिकाओं पर काम करने का आह्वान करता हूं तो जवाब बहुत उत्साह बढ़ाने वाला भी है। कई काम शुरू भी होने की खबर है और इनसे

इस विषय के महत्व का पता चलता है। पहली चीज तो यही है कि गांधी ने इतनी बड़ी संख्या में महिलाओं को नेतृत्व में पहुंचाया, अपने तथा राष्ट्रीय आंदोलन को महिलाओं के सहयोग से व्यापक और मजबूत किया। दूसरे गांधी और महिलाओं को लेकर सोशल मीडिया में इतना दुष्प्रचार है कि जो कोई उधर झांकता है, परेशान हो जाता क्योंकि वह झूठ और गांधी के चरित्र हनन की कोशिश भर है। बुनियादी बात शायद ही कहीं सामने आती है कि गांधी ने अपने अखबार में खुद ही अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोग की खबर दी थी। खैर, वह प्रकरण फिर कभी। ज्यादा जरूरी चर्चा पहले हो।

बात चंपारण के दिनों की ही है। मोतिहारी पहुंचने के अगले ही दिन गांधी अपने दो सहयोगियों के साथ उस पट्टी जसौली गांव जा रहे थे जहां से दो-तीन दिन पहले ही जुल्म की एक घटना की खबर मिली थी वे तीनों हाथी पर थे और अप्रैल का महीना होने के चलते सुबह जल्दी निकले थे कि धूप कम लगे। सुबह का वक्त होने से रास्ते में जगह-जगह ऐसी महिलाएं दिखीं जो शौच वगैरह के लिए निकली थीं। हाथी आते देखकर वे मुंह छुपाकर खड़ी हो जाती थीं। गांधी की मंडली के लिए भी कोई और विकल्प न था लेकिन ऊपर बैठे जो बातचीत चल रही थी वह दिलचस्प थी।

गांधी यह कह रहे थे कि औरतों को परदे से बाहर लाए बगैर मुल्क का कोई काम नहीं हो सकता। आधी आबादी का परदे में रहना उन सबके साथ जुल्म है और देश पीछे जा रहा है। यह चर्चा पूरी हो इससे पहले ही चन्द्रहिया में उन्हें जिला छोड़ने का नोटिस मिल गया और वे पुलिस वाले द्वारा लाई गई बैलगाड़ी पर बैठकर मोतिहारी लौट आए।

चंपारण में अपना काम शुरू करते ही उनको लगा कि औरतों के बीच जाना मुश्किल है। सो उन्होंने बाहर से सबसे पहले कस्तूरबा को बुलाया। फिर विज्ञापन देकर स्वयंसेवक बुलाए क्योंकि तब बिहार में कांग्रेस या किसी संस्था के पास एक भी पूर्णकालिक कार्यकर्ता नहीं था-महिला कार्यकर्ता तो बहुत दूर की बात थी।

गांधी यह कह रहे थे कि औरतों को परदे से बाहर लाए बगैर मुल्क का कोई काम नहीं हो सकता। आधी आबादी का परदे में रहना उन सबके साथ जुल्म है और देश पीछे जा रहा है

अवंतिकाबाई गोखले, आनन्दी बहन, सहयोगी नरहरि पारिख की पत्नी मणि बहन, महादेव भाई की नवविवाहिता दुर्गा बहन जैसी महिलाओं के सहयोग से उन्होंने काम शुरू किया तो बिहार के सहयोगी वकीलों ने भी अपनी पत्नियों और बेटियों को लगाया। यह 1917 और 1918 की बात है।

चंपारण सत्याग्रह, अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन और खेड़ा आंदोलन ही नहीं हुए थे बिहार और पूरा मुल्क असहयोग आन्दोलन से गुजरा था लेकिन इससे दस साल बाद गांधी ने जब नमक सत्याग्रह का फैसला किया तब महिलाओं के जेल जाने या आंदोलन में भागीदारी की कई तरह की पाबंदियों के बावजूद बीस हजार से ज्यादा औरतों ने गिरफ्तारी दी थी। आज तक किसी क्रांति, किसी आंदोलन में एक साथ इतनी महिलाएं जेल नहीं गईं हैं।

अगर हम 42 के आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व का हिसाब लगाएं तो आधा-आधा मामला पहुंच गया लगेगा। अरुणा आसफ अली, कमला देवी, उषा मेहता, सुचेता कृपलानी तो नेतृत्व और संचालक की भूमिका में ही थीं।

गांधी ने सांप्रदायिकता के सवाल पर बहुत मेहनत की, बहुत लम्बा समय लगाया, जान जोखिम में ही नहीं डाली, जान दे भी दी लेकिन विभाजन हुआ, दंगे हुए, मुल्क ने पाकिस्तान से अलग और दुनिया में मिसाल बनने वाला रास्ता अपनाया।

नंगी साम्प्रदायिकता और मजहब के नाम पर बंटवारे के बीच सर्वधर्म समभाव वाली धर्मनिरपेक्ष व्यवस्था बनाई। गांधी ने छुआछूत के सवाल को बहुत महत्व दिया। उन्होंने अपनी चिंताओं और कर्मों में कितने मोर्चे खोले हुए थे यह बात एक बार में समझनी भी मुश्किल है। यह सही है कि गांधी की सम्पूर्ण लड़ाई में मुल्क की आजादी का नम्बर एक था। महिलाओं को आगे लाना और आजादी की लड़ाई के साथ मुल्क के निर्माण में भागीदार बनाना भी ऐसा ही एक काम था। इसका नतीजा आज सौ साल बाद और अच्छी तरह दिख रहा है।

जाहिर तौर पर यह काम अकेले गांधी का न होकर देश की हजारों हजार महिलाओं की भागीदारी से ही संभव हुआ। गांधी ने किसी जादू से नेता नहीं पैदा किए। उन्होंने अपने

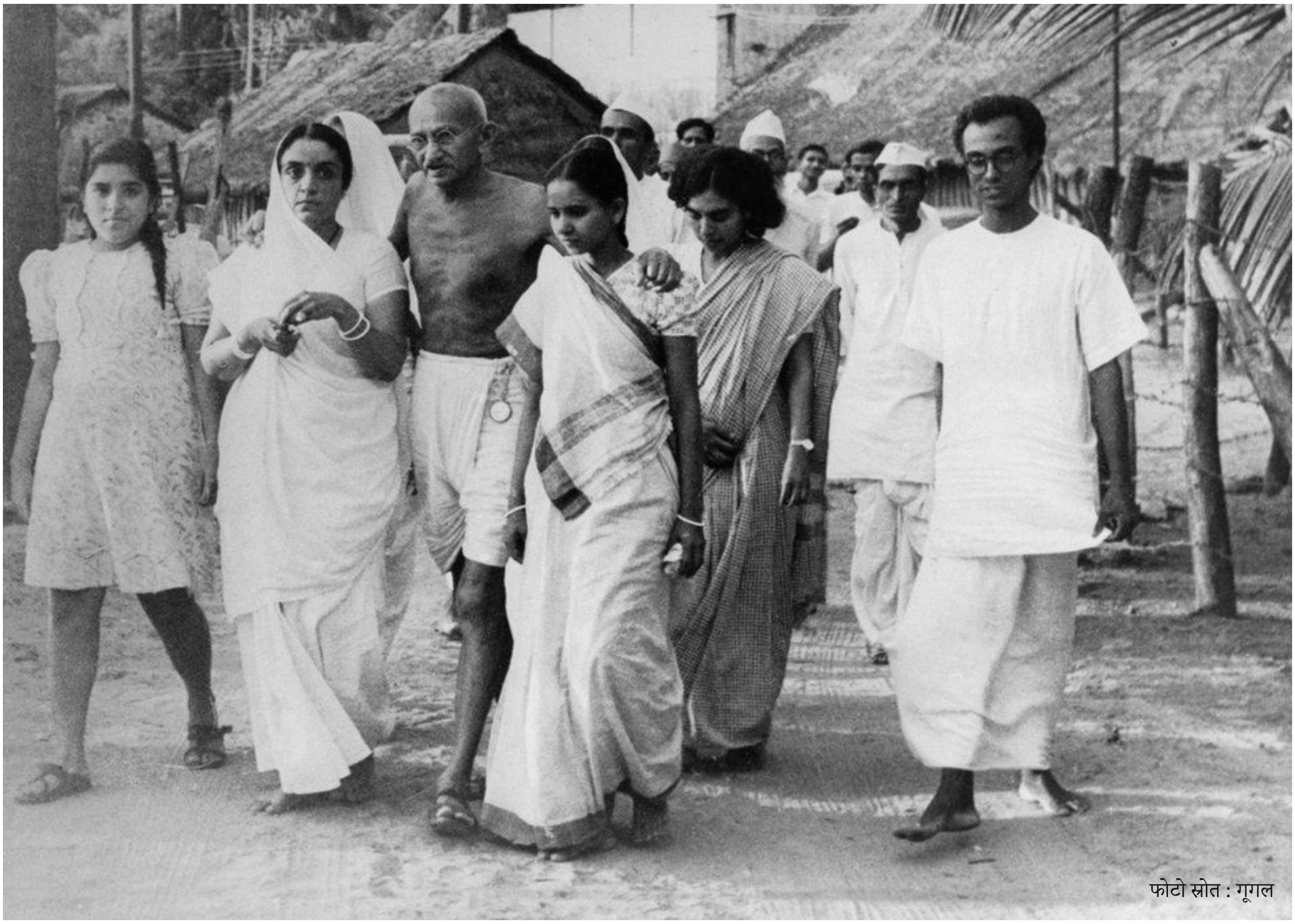

फोटो स्रोत : गूगल

अभियान में परदा को सबसे बड़ा मुद्दा बनाया, औरतों को दहलीज के बाहर लाने को मुद्दा बनाया। महिलाएं आगे आईं। हाथ में तिरंगा लिए पुलिस की गोली खाने वाली औरतें भी सामने आईं और थानों पर ताला जड़ना तो उनके लिए मामूली काम बन गया था।

बदलाव का काम अकेले गांधी ने नहीं किया। उनकी सही और संतुलित सोच, अच्छी रणनीति और कई बार औरतों के लिए विशेष अवसर देने का अपना महत्व है। गांधी का महिलावादी नजरिए से भी इतिहास लेखन नहीं हुआ है वरना यह कहानी कैसे रह जाती कि हमारी नायिकाओं में से अधिकांश को क्या-क्या कष्ट (पुरुषवादी समाज व्यवस्था के चलते भी) उठाना पड़ा। उन्होंने किस किस तरह के फैसले करके अपने काम किए, जान देना

हाथ में तिरंगा लिए पुलिस की गोली खाने वाली औरतें भी सामने आईं और थानों पर ताला जड़ना तो उनके लिए मामूली काम बन गया था।बदलाव का काम अकेले गांधी ने नहीं किया। उनकी सही और संतुलित सोच, अच्छी रणनीति और कई बार औरतों के लिए विशेष अवसर देने का अपना महत्व है

और जेल जाना ही नहीं अपना सब कुछ गंवा दिया या जान-बूझकर छोड़ दिया। काफी सारी लड़कियों ने तो शादी न करने का फैसला किया, कई ने हुई शादी तोड़ दी और खुद से अपने पति से दूसरी शादी कर लेने को कहा (और कई ऐसे महान पुरुष भी निकले जिन्होंने भी जीवन भर शादी नहीं की), कई ने हुई शादी के बीच ब्रह्मचर्य रखने का फैसला किया, कई ने बच्चे पैदा न करने का फैसला किया, अधिकांश ने घर-बार छोड़ा और सब कुछ दान दे दिया।

दुर्गाबाई के पूर्व पति ने उनकी मर्जी से दूसरी शादी की और जब दूसरी पत्नी का निधन हुआ तो उनके सारे गहने दुर्गाबाई की संस्था को दान कर दिए। पर सुचेता जी जैसी भी हुईं जिन्होंने गांधी के लाख विरोध के बावजूद शादी की और फिर पति-पत्नी ने जमकर काम किया-बच्चे न पैदा करने का

फैसला भी किया।

कई तो जोड़ियों में ही काम करती रहीं, कई को उनके पति या ससुर ने ही पढ़ाया और आन्दोलन की सीख दी। कई की शादियां अंतर्जातीय या अंतर्संप्रदायं हुई। कई ने उम्र से बेमेल शादी की या दोस्ती रखी। कई ने तो बुढ़ापे में कष्ट हुआ तो किसी को गोद लिया, कई के साथ ऐसा हुआ कि अपना सब कुछ दान दे देने के चलते बुढ़ापे में रहने की जगह न रही।

ऐसा कष्ट राजकुमारी अमृत कौर और सरदार पटेल की पुत्री मानिबें पटेल को भी हुआ।कई के कष्ट तो अनजाने रह गए। काम की शिकायत, त्याग और कुर्बानी में, लगन और दिलेरी में, समझ और साहस में किसी तरह की कमी या कमजोरी नहीं दिखती।

जब आगे बढ़कर गोली खाने वाली महिलाएं सामने आईं तो पुलिस के डंडे की मार से स्वरूप रानी अर्थात जवाहरलाल नेहरू की मां तक को जान देनी पड़ी। दिल्ली की शेरनी कहलाने वाली बहन सत्यवती समेत दर्जनों उदाहरण हैं जब एक आन्दोलन में एक ही महिला नेता बार-बार गिरफ्तार होती रही क्योंकि पुलिस उसे कम खतरनाक मानकर छोड़ देती थी। वहीं महिला को यह अपमान लगता था या उसे अपने आन्दोलन के मुद्दे को आगे बढ़ाने की धुन सवार थी।

महिलावादी नजरिए से बहुत अच्छी किताब 'स्त्री संघर्ष का इतिहास' लिखने वाली राधा कुमार भी मानती हैं कि भारत में स्त्री संगठनों पर से रजवाड़े या बड़े घर की स्त्रियों का 'कब्जा' हटाकर आम औरतों का कब्जा गांधी के आंदोलन के दौर में ही हुआ और इससे इन संगठनों का चरित्र एकदम बदल गया।

जाहिर तौर पर गांधी भी औरतों को उपवास कराने और चरखा चलवाने वाली भूमिका भर में सीमित नहीं करते।वे औरतें उनसे हर स्तर पर बात करतीं, लड़तीं, नेतृत्व में आतीं, औरतों से जुड़े कानूनों में बदलाव की वकालत होती अर्थात हर स्तर पर औरतों को प्रतिनिधित्व दिया जाता है (वे इसे आरक्षण का नाम नहीं देते) और बाद में इस काम में पंडित नेहरू जैसे लोग उनसे भी आगे बढ़ते हैं।

*(लेखक की किताब, **बापू की महिला ब्रिगेड,** नेशनल बुक ट्रस्ट से हाल में प्रकाशित हुई है)*

लोहिया के विचार हमेशा प्रासंगिक रहेंगे

बुलेटिन ब्यूरो

प्रखर चिंतक, स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजवादी विचारधारा के पुरोधा डॉ राममनोहर लोहिया की 56वीं पुण्यतिथि पर समाजवादी पार्टी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने गोमतीनगर लखनऊ स्थित डॉ राममनोहर लोहिया पार्क में डॉ लोहिया जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि लोहिया जी की विचारधारा हमेशा प्रासंगिक रहेगी। सामाजिक अन्याय और विषमता के विरुद्ध उनकी 'सप्तक्रांति' की अवधारणा को अपनाते हुए समाजवादी पार्टी उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संकल्पित है।

श्री अखिलेश यादव ने इस अवसर पर कहा कि डॉ राममनोहर लोहिया जी ने जो रास्ता दिखाया वह आज भी प्रासंगिक है। अगर आज भी हम उस रास्ते पर चलें, उनके सिद्धांतों पर चलें तो समाज की तमाम समस्याओं का समाधान हो सकता है।

समाजवादी पार्टी के सच्चे सिपाही थे अनिल दोहरे

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कन्नौज से समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक अनिल कुमार दोहरे के निधन पर गहरा शोक जताया।

श्री अनिल कुमार दोहरे का लखनऊ एसजीपीजीआई में 5 अक्तूबर की शाम को निधन हो गया था। श्री अनिल कुमार दोहरे समाजवादी पार्टी के टिकट पर कन्नौज सदर सीट से तीन बार विधायक चुने गए थे। श्री अखिलेश यादव ने 6 अक्तूबर और 18 अक्तूबर को कन्नौज स्थित श्री अनिल कुमार दोहरे के आवास पर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिजनों से मिलकर शोक संवेदना प्रकट की। श्री यादव ने कहा कि हमने सच्चा समाजवादी सिपाही खो दिया है। पार्टी में उनकी जगह भरना काफी मुश्किल है। उन्होंने समाजवादी पार्टी को गांव-गांव पहुंचाया।

मान्यवर कांशीराम के व्यक्तित्व व कृतित्व को याद किया

मान्यवर कांशीराम की पुण्यतिथि पर 9 अक्तूबर को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने सैफई में उनके चित्र पर माल्यार्पण के बाद श्रद्धांजलि अर्पित की। मान्यवर कांशीराम के व्यक्तित्व व कृतित्व को याद करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि मान्यवर कांशीराम ने दलितों में स्वाभिमान और राजनीतिक चेतना जगाने का परिवर्तनकारी काम किया था। बहुजन समाज को उन्होंने राजनीति में स्थान दिलाने का काम किया।

डॉ राममनोहर लोहिया और बाबा साहब अंबेडकर के रास्ते पर चलकर मान्यवर कांशीराम और नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने सत्ता परिवर्तन का एक बड़ा राजनीतिक प्रयोग किया था।

मान्यवर कांशीराम की 17वीं पुण्यतिथि पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय व उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों में समाजवादी पार्टी ने कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

गरीबों के मसीहा थे संत सुखदेव

शाहजहांपुर के सुप्रसिद्ध संत बाबा सुखदेव सिंह की बरसी पर 25 सितंबर को समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय लखनऊ में स्मरण सभा का आयोजन किया गया। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने संत बाबा सुखदेव सिंह जी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी।

इस अवसर पर पीलीभीत, शाहजहांपुर, लखीमपुर खीरी आदि जनपदों तथा पंजाब से आए सिख समाज के लोगों ने श्री अखिलेश यादव को सरोपा भेंट किया।

कार्यक्रम में सर्वश्री बाबा अमरजीत सिंह, कुलदीप सिंह भुल्लर, बाबा निर्मल सिंह पड्डा, मंजीत सिंह, बलवीर सिंह, हरभजन सिंह दुआ, गुरप्रीत सिंह, जितेन्द्र सिंह मल्ली, अमर सिंह, इन्द्रजीत सिंह सिद्धू, मक्खन सिंह (पंजाब), प्रकट सिंह मोगा (पंजाब) की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

साफ़ और बेबाक X

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 10 Oct

जो बसते हैं दिल में लोगों के
वो जाकर भी कहीं न जाते हैं

आपके सिद्धांतों और प्रयासों को नमन करते हुए उन्हें और भी साकार और सार्थक करने की वचनबद्धता के साथ श्रद्धांजलि!

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

WHERE THERE'S A WALL, THERE'S A WILL

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 17h

मप्र ने समाजवादी पार्टी के विधायक चुनकर सदैव एक सकारात्मक संदेश दिया है, और इस बार और भी अधिक विधायक चुनकर मप्र की जनता समाजवादी मूल्यों और सिद्धांतों को बढ़ावा देगी. ये आशा है और जनता से ऐसा करने की अपील भी।

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

संवेदना, सौहार्द और समरसता के पल... देवरिया में शांति की कामना के साथ पुष्पांजलि.

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

अपनी हर कोशिश है... इनके सुनहरे भविष्य के लिए...

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सरकार के भ्रष्टाचार से मतदाता सूची तक नहीं बची है। कन्नौज में सपा की आपत्ति और शिकायत से छुपा हुआ ये सच सामने आया है कि एक बूथ में जितने नाम सही हैं उनसे 5 गुना नाम फ़र्ज़ी हैं। अगर ईमानदारी से जाँच हो जाए तो केवल कन्नौज के एक बूथ में ही नहीं, उप्र के हर एक बूथ में ये भाजपाई घोटाला सामने आएगा। चुनाव आयोग संज्ञान ले और दंडात्मक कार्रवाई करने के बाद मतदाता सूची को सत्यापित कर सुधारे।

Translate Tweet

24.0° न्यूनतम | सूर्य अस्त (आज) 05:59 उदय (कल) 06:00 | कन्नौज

सपा की शिकायत पर बजरिया बूथ में पाए गए 115 फर्जी मतदाता

सपा प्रदेश अध्यक्ष ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी से की थी शिकायत

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

करती पीडीए की बात, एक नयी किताब.

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh · 5d

सपा के शासनकाल में बने, लखनऊ के इकाना इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में हुए वर्ल्ड कप के पहले मैच से उप्र और उप्र की खेल प्रेमी जनता में गर्व और ख़ुशी का माहौल है।

खेलों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जन्म लेती है, जो व्यक्तित्व के सकारात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सपा की इस... Show more

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

बेरोज़गारी का दर्द परिवारवाले ही झेलते हैं और अपनों के जाने का दर्द परिवारवाले ही जानते हैं।

Translate Tweet

पिता फीस नहीं दे पाए तो बेटी गंगा में कूदी: BTC में एडमिशन के लिए 45 हजार देने थे; पिता की चली गई थी नौकरी

सैदपुर, गाजीपुर | 13 मिनट पहले

Following

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

शारदीय नवरात्रि सबको नवशक्ति-नव संकल्प से परिपूर्ण करे व सबके जीवन को मंगलमय बनाएँ... यही कामना, यही शुभकामना!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 04 Oct

राजा महमूदाबाद जनाब मोहम्मद अमीर मोहम्मद खान साहब का इंतकाल, अत्यंत दुखद!

ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति दें।

दुःख की इस घड़ी में समस्त परिजनों को यह असीम दुःख सहने का संबल प्राप्त हो।

विनम्र श्रद्धांजलि!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

ढाबे की चाय... साथ में जनता की राय!

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadava... · 05 Oct ·

अत्यंत दुखद!

प्रतापगढ़ से विधायक रहे श्री श्याद अली जी का इंतकाल, अपूरणीय क्षति!

दिवंगत आत्मा को शांति दें भगवान।

दुःख की इस घड़ी में समस्त परिजनों को यह असीम दुःख सहने का संबल प्राप्त हो।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

Akhilesh Yadav @yadavakhil... · 05 Oct

अमरोहा की हसनपुर विधानसभा से समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक जनाब चौधरी रिफाकत हुसैन साहब का इंतकाल, अत्यंत दुःखद।

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दें।

दुःख की इस घड़ी में समस्त परिजनों को यह असीम दुःख सहने का संबल प्राप्त हो।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि!

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

आदिवासी-दलित-पिछडों की सामाजिक-आध्यात्मिक और वैज्ञानिक क्रांति पर मंथन, चिंतन एवं लेखन के ज़रिए गैर-बराबरी मिटाने व बराबरी के लिए लगातार संघर्षरत प्रोफ़ेसर कांचा आइलैय्या शेपर्ड जी से मुलाक़ात के अद्भुत पल।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

आज कन्नौज में पूर्व विधायक स्वर्गीय श्री अनिल दोहरे जी को अर्पित की पुष्पांजलि।

Translate post

Akhilesh Yadav @yadavakhilesh

आज सुल्तानपुर के ग्राम अझुई में पूर्व विधायक स्वर्गीय अबरार अहमद जी को अर्पित किए श्रद्धासुमन।

शोकाकुल परिजनों के प्रति गहन संवेदना।

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 48 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

मारे जाएँगे

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे, मारे जाएँगे,

कठघरे में खड़े कर दिये जाएँगे
जो विरोध में बोलेंगे
जो सच-सच बोलेंगे, मारे जाएँगे।

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा कि किसी की कमीज हो
उनकी कमीज से ज्यादा सफ़ेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जाएँगे।

धकेल दिये जाएंगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं होंगे
जो गुण नहीं गाएंगे, मारे जाएँगे।

धर्म की ध्वजा उठाने जो नहीं जाएँगे जुलूस में
गोलियां भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिये जाएँगे।

सबसे बड़ा अपराध है इस समय निहत्थे और निरपराधी होना
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जाएँगे।

- राजेश जोशी

(साभार: कविता कोश)